हरिभूमि

रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

तापमान

अधिकतम 18.0 डिग्री
न्यूनतम 2.4 डिग्री

12 रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए सर्च अभियान जारी

12 कोहरे ने रोकी वाहनों की रफ्तार, पारा गिरने से ठंड पीक की ओर बढ़ी, शुक्रवार की रात रही सबसे ठंडी

खबर संक्षेप

मारपीट मामलों में दो आरोपी गिरफ्तार

जाटूसाना। थाना पुलिस ने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने अस्पताल में घायल पीड़ित के बयान पर गत वर्ष 28 दिसंबर को कई आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। पीड़ित ने मारपीट करने और धमकी देने के आरोप लगाए थे। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने पातुहेड़ा निवासी विनय कुमार और यूपी के मथुरा निवासी सुनीता को गिरफ्तार किया है। दोनों को तफ्तीश में शामिल करने के बाद में पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सड़क हादसों के आरोपी चालक गिरफ्तार

कोसली। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार चार वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। खोल थाना पुलिस ने सड़क हादसे के बाद गत 3 नवंबर को दर्ज केस में दिल्ली के ढासा निवासी इंद्रपाल को गिरफ्तार किया गया है। धारूहेड़ा थाना पुलिस ने 31 दिसंबर को दर्ज मामले में राजस्थान के पासपटेहरा निवासी सचिन को गिरफ्तार किया है। कसोला पुलिस ने 7 जनवरी को दर्ज मामले में राजस्थान के रामपुर निवासी सुलेमान को गिरफ्तार किया है, जबकि मॉडल टाउन थाना पुलिस ने 5 जनवरी को दर्ज मामले में गुरूग्राम के फरीदपुर निवासी सुभाष को गिरफ्तार किया है।

दहेज प्रताड़ना मामले में एक गिरफ्तार

कुंड। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न व जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। विवाहिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच काउंसलिंग के जरिए समझौता कराने के प्रयास किए थे। कई बार पुलिस थाने में दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई, लेकिन उनमें सुलहनामा नहीं हुआ। इसके बाद पुलिस ने गत वर्ष 8 जून को ससुराल पक्ष के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने यूपी के परतापुर निवासी कमलेश कुमार को गिरफ्तार कर लिया। बाद में आरोपी को पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

एक्साइज एक्ट का आरोपी तफ्तीश में शामिल

रेवाड़ी। सदर थाना पुलिस ने एक्साइज एक्ट के तहत दर्ज मामले में आरोपी को तफ्तीश में शामिल किया है। पुलिस ने अवैध रूप से शराब बेचने के आरोप में गत 6 जनवरी को एक्साइज एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। आरोपी गोकलगढ़ निवासी संदीप पुलिस के हाथ नहीं लग पाया था। पुलिस ने आरोपी संदीप को गिरफ्तार कर लिया। उसे तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया। एक अन्य मामले में खोल थाना पुलिस ने मायन निवासी भुलन को गिरफ्तार किया है।

नाबालिग से दुष्कर्म का आरोपी जेल भेजा

डहीना। पुलिस चौकी ने नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने एक गांव निवासी पीड़िता के परिजनों की शिकायत के आधार पर 9 जनवरी को साहिल नाम के युवक के खिलाफ केस दर्ज किया था। पुलिस ने शिकायत मिलने के बाद नाबालिग का सामान्य अस्पताल से मेडिकल कराया था, जिसमें रेप की पुष्टि हुई थी। पुलिस ने इस मामले में आरोपी साहिल को गिरफ्तार कर लिया।

अवैध शराब के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने अवैध रूप से शराब बेचने के मामले में 2 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ एक्साइज एक्ट के तहत मामले दर्ज किए गए हैं। सिटी पुलिस ने इंद्रा कालोनी निवासी वशु उर्फ बुगल को 50 पव्वा देशी शराब सहित काबू किया है।

वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क से बना रहे साइबर ठगी का शिकार

दस दिनों में साइबर ठगी के 6 केस दर्ज, विदेशों में बैठे मास्टरमाइंड सुरक्षित, खाताधारक कर रहे जेल यात्रा

लखपति बनने के लालच में बैंक खाते खाली करा रहे लोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

पहले ऑनलाइन टास्क या इन्वेस्टमेंट करने पर मोटी कमाई का लालच देना। शुरूआत में चंद रुपये खाते में भेजकर जाल में फंसाना और बाद में लालच में फंसे लोगों के बैंक खाते खाली करना। साइबर ठगी करने के मास्टरमाइंड इस सिलसिले को नए-नए तरीकों से आगे बढ़ा रहे हैं। पुलिस से लेकर बैंकों तक की जागरूकता ठगों के सामने ज्यादा असर नहीं दिखा रही है। नए साल में भी साइबर ठग अपने काम को उसी रफ्तार से अंजाम दे रहे हैं। साल के पहले 10 दिनों में 6 एफआईआर दर्ज हो चुकी हैं, जबकि शिकायतों की संख्या 100 का आंकड़ा पार कर चुकी है। साइबर ठगी के मामलों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो वर्ष 2025 में साउथ रेंज साइबर पुलिस स्टेशन में 163 अभियोग अंकित किए गए थे। वर्ष 2024 में इन मामलों की संख्या 64 रही थी। साइबर ठगी की शिकायतें एफआईआर की तुलना में कई गुणा अधिक रही थीं। पुलिस साइबर ठगी के बड़े मामलों में ही अभियोग अंकित करती है। छोटी ठगी के मामलों की शिकायतों पर माथापच्ची करना संभव भी नहीं है। बीते साल पुलिस ने साइबर थाना पुलिस ने ठगी के मामलों में 200 लोगों को गिरफ्तार करते हुए लगभग 2 करोड़ की राशि बरामद करने में सफलता हासिल की थी। वर्ष 2024 की तुलना में गिरफ्तार किए गए आरोपियों की संख्या काफी अधिक रही। वर्ष 2024 में 31 आरोपियों को ही गिरफ्तार किया गया था। इस दौरान पुलिस कुछ मास्टरमाइंड तक भी पहुंच पाई, जिनसे फर्जी सिमकार्ड व ठगी का अन्य सामान बरामद किया गया। पुलिस का जागरूकता अभियान भी लगातार चलता रहा, परंतु ठगी का शिकार होने वाले लोगों की संख्या कम होने की बजाय बढ़ती ही रही। इस साल के पहले दस दिनों में ऑनलाइन से लेकर ऑफलाइन तक साइबर ठगी की 100 से अधिक शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं।

पुलिस से लेकर बैंकों तक की जागरूकता ठगों के सामने ज्यादा असर नहीं दिखा रही है। नए साल में भी साइबर ठग अपने काम को उसी रफ्तार से अंजाम दे रहे हैं

रेवाड़ी। साउथ रेंज साइबर पुलिस स्टेशन। फोटो : हरिभूमि

ऑनलाइन टास्क के नाम पर लालच

ऑनलाइन टॉस्क और पार्ट टाइम जॉब के नाम पर ठगी के मामले ज्यादा देखने को मिल रहे हैं। अभी तक डिजिटल अरेस्ट को लेकर कोई मामला सामने नहीं आया है। सबसे बड़ी बात यह है कि साइबर ठग पुरुषों से ज्यादा महिलाओं को झांसे में देकर ठगी की वारदात को अंजाम देने में ज्यादा कामयाब हो रहे हैं। बीते साल दर्ज किए गए मामलों में कई महिलाओं को ठगी का शिकार बनाया गया है। आईजीएल के गैस कनेक्शनों के बिलों का भुगतान करने के नाम पर ठगी की वारदात भी काफी हो रही हैं।

तुरंत फोन करने से पैसा बचने की संभावना

लोगों को साइबर फ्रॉड से बचने के लिए लगातार जागरूक किया जाता है। इसके बावजूद थोड़ा सा लालच बड़ी ठगी का कारण बन जाता है। ठगी के बाद अगर तुरंत डायल-1930 पर कॉल की जाती है, तो इससे संबंधित बैंक खाते को सीज कराने के बाद ठगी की रकम बचने की उम्मीद बनी रहती है।
-फूल कुमार, एसएचओ, साइबर थाना।

खाताधारकों तक ही पुलिस की पहुंच

ठगी की रकम जिन बैंक खातों में ट्रांसफर होती है, पुलिस ज्यादातर मामलों में उन खाता धारकों को ही गिरफ्तार करने में सफल रहती है। साइबर ठगों को कमिशन बेस पर खाता मुहैया कराने वाले मध्यस्थ भी पुलिस के हत्थे चढ़ते हैं, परंतु असली मास्टर माइंड की पहचान पुलिस के लिए आसान नहीं है। बैंक खाता धारक मामूली लालच में साइबर ठगों को खाता उपलब्ध कराते हैं। ठगी की रकम खाते में जाने के बाद पुलिस के लिए उन तक पहुंचना ज्यादा मुश्किल नहीं होता।

जागरूकता ही करती है ठगी से बचाव

साइबर एक्सपर्ट राहुल कुमार ने बताया कि लोगों को साइबर ठगी से बचने के लिए लगातार पुलिस विभाग की ओर से जागरूक किया जाता है। ऑनलाइन टॉस्क या जॉब से लेकर इन्वेस्टमेंट के लालच में नहीं आने का संदेश लोगों को दिया जाता है। इसके बावजूद लोग साइबर ठगों के झांसे में आ जाते हैं। डिजिटल अरेस्ट की धमकी से भी लोग ठगी का शिकार हो जाते हैं। हालांकि इस समय डिजिटल अरेस्ट की धमकी के मामलों की संख्या कम हो चुकी है।

छोटा लालच देकर लगा रहे बड़ी चपत

साइबर ठगी के लिए सोशल मीडिया एक मजबूत प्लेटफॉर्म साबित हो रहा है। इंस्टाग्राम और व्हाट्स एप के जरिए लोगों को ऑनलाइन टास्क और पार्ट टाइम जॉब के नाम पर मोटे पैसे का लालच दिया जाता है। शुरूआत में साइबर ठग जॉब करने वाले के खाते में 200 से 500 रुपये तक डालते हैं। इसके बाद प्री-पेड कार्य करने के नाम पर बार-बार विभिन्न खातों में पैसे ट्रांसफर कराने में कामयाब हो जाते हैं। जब पैसा रिफंड करने को कहा जाता है, तो उसके लिए और ज्यादा पैसे ट्रांसफर करने की बात कही जाती है।

डायल-1930 पर करें कॉल, पैसा बचना संभव

साइबर ठगी का पता चलते ही अगर डायल-1930 नंबर पर कॉल की जाए, तो उससे ठगी का पैसा बचने की संभावना ज्यादा होती है। इस नंबर पर कॉल करने के बाद उस खाते को पुलिस तुरंत सीज कराने का प्रयास करती है, जिसमें ठगी की रकम ट्रांसफर होती है। हालांकि कई मामलों में यह बात सामने आई है कि साइबर ठग पैसा ट्रांसफर होने के तुरंत बाद संबंधित खाते को खाली कर देते हैं, जिससे खाता सीज कराने का कोई भी फायदा नहीं होता।

सुसाइड नोट लिखकर कंपनी कर्मचारी ने फंदा लगाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जलियावास गांव में एक कंपनी कर्मचारी ने शुक्रवार की रात अपने कमरे में फांसी लगाकर जान दे दी। उसके पास से एक सुसाइड नोट भी मिला है, जिसे कब्जे में लेकर पुलिस ने एफएसएल भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी। शनिवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया। यूपी के इटावा निवासी 24 वर्षीय सुजीत अपने छोटे भाई जय कुमार के साथ बावल की एक कंपनी में काम करता था। दोनों में से एक दिन में और दूसरा रात में ड्यूटी करता था। शनिवार को जब जयकुमार ड्यूटी के बाद कमरे पर पहुंचा तो सुजीत का शव फंदे पर लटकता मिला। उसने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर शव कब्जे में लिया। सीन ऑफ क्राइम टीम को भी मौके पर बुलाया गया। तलाशी के दौरान पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें उसने भाई से पैसे उधार लेने और परिजनों से उसे पैसे वापस देने की बात लिखी है। महज पांच हजार रुपये का जिक्र किया गया है। साथ ही सुसाइड नोट में उसने अपनी मर्जी से मौत को गले लगाने की बात लिखी है। पुलिस ने सुसाइड नोट को कब्जे में ले लिया। इसके जांच के लिए एफएसएल भेजा जाएगा।

मृतक सुजीत का फाइल फोटो।

■ एक माह पहले ही हुई थी युवक की शादी

गांव में ही रही सुजीत की पत्नी

मृतक के भाई जयकुमार ने बताया कि करीब एक माह पहले ही शादी कर सुजीत गांव से ड्यूटी करने आया था। भाभी अभी गांव में रहती है। शुक्रवार शाम को वह नाइट शिफ्ट में ड्यूटी पर गया था और सुजीत को सुबह की शिफ्ट में जाना था। सुबह जब वह कमरे पर लौटा तो शव फंदे पर लटकता मिला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद उसके भाई को सौंप दिया। परिवार के अन्य सदस्य भी सुसाइड की सूचना के बाद अस्पताल पहुंच गए, जिनकी मौजूदगी में ही पोस्टमार्टम कराया गया।

सड़क हादसे में कंपनी कर्मचारी की मौत

रेवाड़ी। शुक्रवार की रात महेंद्रगढ़ रोड पर जाडरा के निकट किसी वाहन की चपेट में आकर एक कंपनी कर्मचारी की मौत हो गई। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद वाहन चालक का पता लगाने के प्रयास शुरू कर दिए। रामपुरी निवासी लगभग 30 वर्षीय विकास यादव एक प्राइवेट कंपनी में कार्यरत था। रात को वह ड्यूटी खत्म करने के बाद अपनी बाइक से घर जा रहा था। वह जाडरा को क्रॉस करने के बाद एक प्राइवेट स्कूल के पास पहुंचा, तो किसी वाहन ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। संभवतया हादसा कोहरे के कारण होना माना जा रहा है। वाहन की टक्कर लगने के बाद विकास सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। गुजरने वाले लोगों ने एंबुलेंस की मदद से उसे अस्पताल पहुंचाया, डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

ढाई साल पहले चोरी हुई बाइक, अनट्रेस दिखाकर फाइल की बंद, अब दिल्ली में कट गया चालान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

वर्ष 2023 में बावल रोड से एक बाइक चोरी हुई थी। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद केस को अनट्रेस दिखाते हुए फाइल बंद कर दी थी। अब उसी बाइक का दिल्ली में चालान होने के बाद मालिक के मोबाइल फोन पर 10 हजार रुपये का चालान होने का मैसेज आया, तो यह बात पुख्ता हो गई कि चोरी की बाइक देश की राजधानी में दौड़ रही है। शिकायत मिलने के बाद पुलिस बाइक व चोर का पता लगाने के प्रयास करेगी। सूंदरोज निवासी सुनील कुमार की बाइक बावल रोड पर दुर्गा मार्केट के पास से चोरी हो गई थी। उसकी शिकायत पर मॉडल टाउन थाना पुलिस ने 27 सितंबर 2023 को बाइक चोरी का केस दर्ज किया था। तमाम प्रयासों के बाद भी बाइक का कुछ पता नहीं चला, तो पुलिस ने अनट्रेस दिखाते हुए केस की फाइल बंद कर दी थी। सुनील ने इससे पूर्व अपने स्तर पर भी बाइक का पता लगाने के प्रयास किए थे, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी। चार दिन पहले उसके मोबाइल फोन पर दिल्ली में उसकी बाइक का चालान होने का मैसेज आया, तो उसकी परेशानी बढ़ गई। बाइक का 10 हजार रुपये का चालान हुआ है। चोरी का केस पहले से दर्ज कराया हुआ है, इसलिए उसे चालान भुगतने की आवश्यकता नहीं है, परंतु बाइक हासिल करने के लिए उसने प्रयास जरूर शुरू कर दिए हैं।

■ चालान के जरिए बाइक चोर तक पहुंचने का प्रयास करेगी पुलिस

बाइक का चालान करने के बाद आया मैसेज।

शिकायत के बाद लगाएंगे पता

एसएचओ रतनलाल ने बताया कि अगर बाइक मालिक की ओर से फिर से शिकायत दर्ज कराई जाती है, तो दिल्ली में चालानिंग ऑफिस से बाइक के चालान की लोकेशन का पता लगाया जाएगा। इसके बाद बाइक और चोर का पता लगाने का प्रयास किया जाएगा। शिकायत मिलते ही इस मामले में आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

नाबालिग हॉकी खिलाड़ी से दुष्कर्म का आरोपी कोच चढ़ा पुलिस के हत्थे

डहीना। थाना खोल पुलिस ने क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली नाबालिग हॉकी खिलाड़ी के साथ दुष्कर्म करने के मामले में एक आरोपी जूनियर कोच को गिरफ्तार किया है।आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद दो दिन के रिमांड पर लिया गया है। गत 9 जनवरी को क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली एक नाबालिग छात्रा ने अपनी शिकायत में बताया था कि वह 12वीं कक्षा की छात्रा है और हॉकी खेलती है। 3 साल से उसकी अपने जूनियर कोच से जान-पहचान है। करीब 4 महीने पहले उसके जूनियर कोच ने स्टेडियम के बाथरूम में उसके साथ दुष्कर्म किया था। दुष्कर्म के कारण वह गर्भवती हो गई थी। 5 जनवरी को उसका गर्भपात हो गया और तबीयत खराब होने पर उसके परिवार के लोगों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने आरोपी की खिलाफ थाना खोल में पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज करके मामले में त्वरित कार्यवाही करते हुए शुक्रवार को मामले में संलिप्त आरोपी जूनियर कोच को गिरफ्तार कर लिया है।

भारी मात्रा में डोडा पोस्त के साथ दो आरोपी काबू

■ उनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जीआरपी ने शनिवार सुबह रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म 8 पर भारी मात्रा में नशीला पदार्थ डोडा पोस्त के साथ दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। जीआरपी की टीम को प्लेटफार्म पर गश्त के दौरान दो युवक संदिग्ध अवस्था में बैठे नजर आए। जीआरपी स्टाफ को देखकर युवकों ने वहां से भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने पीछा करते हुए दोनों को काबू कर लिया। उनके पास मौजूद बैगों की तलाशी ली गई, तो 12.40 किलोग्राम डोडा पोस्त बरामद हुआ। दोनों को मौके पर ही काबू करने के बाद एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया। एसएचओ कृष्ण कुमार ने बताया कि एक आरोपी भिवानी के बवानीखेड़ा निवासी सोनू और दूसरा रानियां निवासी सुखविंद्र है। दोनों नशे का इस्तेमाल करते हैं। वह चित्तौड़गढ़ से डोडा पोस्त लेकर आए थे। रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरने के बाद भिवानी की ओर जाने वाली ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान जीआरपी ने दोनों को काबू कर लिया।

रेवाड़ी। गिरफ्तार किए गए आरोपी जीआरपी की टीम के साथ। फोटो : हरिभूमि

राजनीति | टिकट को लेकर भाजपा और कांग्रेस दोनों में रहेगी मारामारी

कड़ाके की ठंड में चढ़ेगा सियासी पारा, 22 को ड्रा के बाद तेज होगी हलचल, टिकट पर घमासान संभव

जनरल सीट की स्थिति में देखने को मिलेगी टिकट की जंग

राव इंद्रजीत सिंह

वंदना पोपली

विजय राव

राहुल यादव

महेंद्र छाबड़ा

नरेन्द्र वत्स ▶▶| रेवाड़ी

नगर परिषद चुनाव को लेकर 22 जनवरी को ड्रॉ के आधार पर चेयरमैन पद का फैसला होना है। इसके बाद कड़ाके की ठंड में शहर की राजनीति उफान पर आ जाएगी। अगर चेयरमैन का पद जनरल कैटेगरी का हुआ, तो टिकट को लेकर भाजपा और कांग्रेस दोनों में घमासान देखने को मिलेगा। पिछले चुनावों की तर्ज पर इस बार भी भाजपा खेमे में टिकट की बाजी केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के हाथ में आने की संभावना है, वहीं कांग्रेस में इस बार बदलाव देखने को मिल सकता है। नगर परिषद के पिछले चुनावों में टिकट को लेकर भाजपा के राव व एंटी राव खेमे के बीच जमकर जंग देखने को मिली थी। आखिरकार टिकट की कमान राव को मिली, जिन्होंने पूनम यादव को टिकट दिलाकर मैदान में उतार दिया था। दूसरे खेमे की ओर से पूनम को जबरदस्त विरोध का सामना करना पड़ा था, परंतु 'टीम राव' के अथक प्रयास उन्हें चेयरमैन की कुर्सी पर काबिज कराने में सफल हो गए थे। इस बार टिकट की दावेदारी को लेकर राव खेमे से ही कई चेहरे तैयार हैं, परंतु अभी ड्रा होने का इंतजार है। गत विधानसभा चुनावों के बाद से ही राव विरोधी खेमे में शांति नजर आ रही है, जिससे इस बार टिकट के समय विरोध की गुंजाइश कम नजर आ रही है। जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली की भूमिका भी महत्वपूर्ण रहेगी। वंदना राव की करीबी मानी जाती हैं, जिस कारण टिकट को लेकर दोनों की सहमति विरोधी खेमे के प्रयासों को झटका देने के लिए काफी है। पुरानों के साथ इस बार नए चेहरे भी शहर के सियासी दंगल में भाग्य आजमाने के लिए जोर-आजमाइश करते हुए नजर आएंगे।

कैप्टन के हाथ से छूट सकती है कमान

पिछले चुनावों में कांग्रेस में चेयरमैन की टिकट की कमान पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव के हाथों में रही थी। उनके खास समर्थकों की उम्मीदों को उस समय झटका लगा था, जब कैप्टन टिकट दिलाने के मामले में परिवार से बाहर नहीं निकल पाए थे। उन्होंने अपने भतीजे रणविजय की पत्नी विक्रम को टिकट दिलाई थी, जिससे पुराने व निष्ठावान समर्थकों को झटका लगा था। खुद लोकसभा चुनावों में टिकट से वंचित रहने के बाद बेटे की हार का सामना कर चुके कैप्टन के हाथ से इस बार नगर परिषद की टिकट की कमान भी छूट सकती है।

नए चेहरे भी मैदान में कूदने को तैयार

अगर चेयरमैन का पद जनरल कैटेगरी के हिस्से में आता है, तो पूर्व चेयरमैन विजय राव भाजपा की टिकट पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं। विजय केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह खेमे से ही आते हैं। नए चेहरे के रूप में राहुल यादव भी इस बार राव के आशीर्वाद से चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी कर रहे हैं। पंजाबी समाज से भी राव के कुछ खास टिकट की उम्मीद लगाए बैठे हैं। वहीं कांग्रेस में पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा खेमे से जुड़े महेंद्र छाबड़ा भी टिकट मिलने की सूरत में चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं।

सट्टा खाईवाली करने के आरोप में दो गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने शहर में सट्टा खाईवाली करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से सट्टे की राशि और पर्चियां बरामद की गई हैं। आरोपियों के खिलाफ गैंबलिंग एक्ट के तहत केस दर्ज किए गए हैं।

सिटी पुलिस को सूचना मिली थी कि नई आबादी निवासी तिलकराज सट्टा खाईवाली कर रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसके कब्जे से सट्टे की 2450 रुपये की राशि बरामद हुई। एक अन्य मामले में रामपुरा थाना पुलिस ने गिंदोखर निवासी राजकुमार को चांदावास बाइपास के पास फ्रूट की रेहड़ी पर सट्टा खाईवाली करते हुए गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से सट्टा पर्चा व 6150 रुपये बरामद किए हैं। उसके खिलाफ रामपुरा पुलिस थाने में केस दर्ज किया गया है।

सिबिल स्कोर अच्छा होने के बावजूद क्रेडिट कार्ड क्यों हो जाता है रिजेक्ट

सुझाव | बिजनेस डेस्क

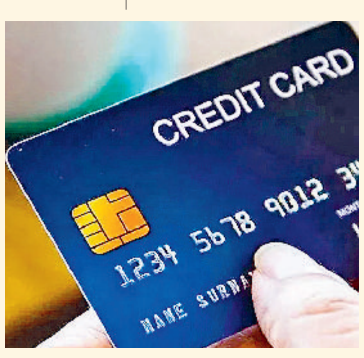

आज के समय में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बिल पेमेंट, ट्रैवल और कैशलेस ट्रांजेक्शन के लिए क्रेडिट कार्ड का सहारा लेते हैं। आम धारणा यह है कि अगर आपका सिबिल स्कोर अच्छा है तो बैंक आसानी से आपका क्रेडिट कार्ड अप्रूव कर देगा, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है। कई बार सिबिल स्कोर मजबूत होने के बावजूद भी बैंक क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर देते हैं।

कार्ड की कैटेगरी व इनकम का मेल जरूरी

जानकारों का कहना है कि क्रेडिट कार्ड रिजेक्शन का सबसे बड़ा कारण कार्ड की कैटेगरी और आवेदक की इनकम होती है। उन्होंने कहा, "जिस क्रेडिट कार्ड के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, क्या आपकी सैलरी उस कार्ड के लिए तय मानकों के अनुरूप है?" कई बार लोग प्रीमियम या हाई-कैटेगरी कार्ड के लिए आवेदन कर देते हैं, जबकि उनकी इनकम उस स्तर के कार्ड के लिए पर्याप्त नहीं होती। ऐसे मामलों में बैंक अप्रूवल देने से बचता है।

नौकरी की स्थिरता की अहम भूमिका

क्रेडिट कार्ड अप्रूवल में नौकरी की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। स्थायी नौकरी करने वाले कर्मचारियों को बैंक अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं। वहीं, कॉन्ट्रैक्ट या अस्थायी नौकरी करने वालों के प्रोफाइल को बैंक ज्यादा जोखिम भरा मान सकते हैं, जिससे कार्ड रिजेक्ट होने की संभावना बढ़ती है।

बार-बार आवेदन नुकसानदेह

कम समय में कई बैंकों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करना भी नेगेटिव सिग्नल माना जाता है। बार-बार आवेदन करने से क्रेडिट प्रोफाइल प्रभावित होती है और बैंक इसे वित्तीय दबाव का संकेत मान सकते हैं।

मौजूदा लोन व ईएमआई भी देखता है बैंक

अगर किसी व्यक्ति पर पहले से कई लोन या भारी ईएमआई का बोझ है, तो बैंक नए क्रेडिट कार्ड के लिए मंजूरी देने में हिचकिचाता है। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ग्राहक की आय और खर्चों में संतुलन बना हुआ हो।

खाते वाले बैंक से कार्ड लेना फायदेमंद

विशेषज्ञों की सलाह है कि क्रेडिट कार्ड के लिए सबसे पहले अपने मौजूदा बैंक को प्राथमिकता दें। जिस बैंक में आपका सेविंग अकाउंट है, वह आपके ट्रांजैक्शन पैटर्न और फाइनेंशियल बिहेवियर को बेहतर तरीके से समझता है, जिससे अप्रूवल के चांस बढ़ जाते हैं।

कम क्रेडिट कार्ड, ज्यादा भरोसेमंद प्रोफाइल

- अंत में विशेषज्ञों का कहना है कि एक व्यक्ति को एक या दो क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित रहना चाहिए।
- ज्यादा क्रेडिट कार्ड होने पर बैंक आपके प्रोफाइल को जोखिम भरा मान सकता है, जिससे नए आवेदन रिजेक्ट होने की आशंका बढ़ जाती है।

क्या है सिबिल स्कोर

सिबिल स्कोर एक 3-डिजिट का नंबर होता है जो आपकी क्रेडिट हिस्ट्री को दर्शाता है। यह नंबर 300 से 900 के बीच होता है, और यह आपकी क्रेडिटवर्थीनेस को मापता है। सिबिल स्कोर आपके लायन, क्रेडिट कार्ड, और अन्य क्रेडिट प्रोडक्ट्स के भुगतान इतिहास, क्रेडिट उपयोग, और अन्य कारकों के आधार पर गणना किया जाता है।

सिबिल स्कोर के फायदे

- लायन और क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने में मदद करता है
- कम ब्याज दर पर लायन प्राप्त करने में मदद करता है
- क्रेडिटवर्थीनेस को बढ़ाता है
- वित्तीय योजना बनाने में मदद करता है

सिबिल स्कोर को कैसे बढ़ाएं

- समय पर भुगतान करें
- क्रेडिट उपयोग को कम रखें
- क्रेडिट रिपोर्ट में गलतियों को सुधारें
- नए क्रेडिट अकाउंट न खोलें
- क्रेडिट हिस्ट्री को लंबा रखें

निवेशक सोने और चांदी की तरफ कर रहे रुख, पोर्टफोलियो में बनाएं विविधता

अस्थिरता के दौर में गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ?

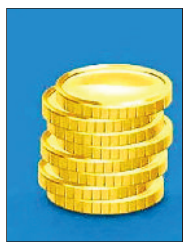

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी जोड़कर विविधता लाएं

सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं।

अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच, निवेशक तेजी से सोना और चांदी जैसे पारंपरिक सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए मुख्य सवाल अब यह है कि क्या उन्हें गोल्ड ईटीएफ, सिल्वर ईटीएफ या दोनों का मिश्रण चुनना चाहिए? बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के दौरान पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए। क्योंकि सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है। सिल्वर ईटीएफ को कम अनुपात में रखा जा सकता है क्योंकि इनमें अधिक उतार-चढ़ाव होता है और इनकी मांग काफी हद तक औद्योगिक उपयोग पर निर्भर है।

अलग-अलग भूमिका है दोनों धातुओं की

दोनों धातुएं पारंपरिक रूप से अलग-अलग भूमिकाएं निभाती हैं। पोर्टफोलियो पोजिशनिंग के दृष्टिकोण से अधिकांश निवेशकों को दोनों में संतुलित निवेश रखना चाहिए। सोना प्राथमिक सुरक्षित-निवेश एंकर बना रहना चाहिए, जबकि चांदी पूरक भूमिका निभाते हुए कुछ चरणों में अधिक रिटर्न दे सकती है। निवेशक यह कभी न भूलें कि कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता। इसलिए इक्विटी और डेट सहित मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है।

मौजूदा समय में पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए

■

सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है

■

निवेशक ध्यान रखें कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता

नए निवेशक क्या करें?

इस सप्ताह सोना और चांदी मजबूत बढ़त के साथ खुले और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच एक सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए। अनिश्चितता के इस दौर में यह सवाल भी उभरता है कि पहली बार निवेश करने वालों के लिए फोकस कहां होना चाहिए? ऐतिहासिक रूप से भू-राजनीतिक तनाव के समय सोना मजबूत सुरक्षित-निवेश माना गया है और केंद्रीय बैंकों की अधिक भागीदारी, व्यापक वैश्विक स्वीकार्यता और गहरी लिक्विडिटी के कारण सोना आमतौर पर संकट के समय बेहतर प्रदर्शन करता है। पहली बार निवेश करने वालों को सोने के ईटीएफ में मुख्य सुरक्षित-निवेश करना चाहिए, लेकिन पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी भी जोड़कर विविधता लाई जा सकती है।

मुद्रा विनिमय दर का भी होता है असर

मुद्रा विनिमय दरों का उतार-चढ़ाव भी सोना और चांदी ईटीएफ से मिलने वाले रिटर्न को प्रभावित करता है। सोना एक कीमती धातु के रूप में, आम तौर पर डॉलर और ब्याज दरों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होता है, जबकि चांदी मुद्रा उतार-चढ़ाव के अलावा वैश्विक वृद्धि की उम्मीदों पर भी प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष ने तेल की कीमतों और मुद्रास्फीति को लेकर चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। बढ़ती तेल कीमतें मुद्रास्फीति को ऊपर धकेल सकती हैं, जिससे आम तौर पर कीमती धातुओं को समर्थन मिलता है क्योंकि निवेशक बढ़ती लागत के खिलाफ हेज की तलाश करते हैं।

डॉलर की कीमत कैसे करेगी प्रभावित?

वेनेजुएला ऑपरेशन के बाद दिए गए बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अब हम वेनेजुएला को चलाने जा रहे हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिका अन्य देशों को वेनेजुएला का काफी तेल बेचेगा।इन हालात में निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि डॉलर की मजबूती और मुद्रा-विनिमय उतार-चढ़ाव सोना और चांदी की कीमतों को कैसे प्रभावित करते हैं? असल में सोना और चांदी दोनों ही आम तौर पर डॉलर के विपरीत दिशा में चलते हैं। मजबूत डॉलर कीमतों पर दबाव डालता है, जबकि कमजोर डॉलर उन्हें सपोर्ट करता है। सोना मुद्रा और ब्याज-दर के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि चांदी पर आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि का भी प्रभाव होता है।सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, चांदी के औद्योगिक उपयोग के कारण कमजोर डॉलर अक्सर इस कीमती धातु में तेज बढ़त को ट्रिगर करता है क्योंकि विदेशी विनिर्माण मांग बढ़ जाती है।

आक्रामक रणनीति नहीं रीबैलेंसिंग करें

एक सवाल यह भी है कि निवेशकों के लिए मौजूदा परिस्थिति में क्या यह समय एक्सपोजर बढ़ाने का है या सिर्फ मौजूदा गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करने का? दूसरी बात क्या बढ़ती मुद्रास्फीति या तेल कीमतें गोल्ड बनाम सिल्वर के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं? ऐसे में मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है, क्योंकि कोई भी एसेट हमेशा नहीं जीतता। इसके बावजूद मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए कीमती धातुएं अब भी पोर्टफोलियो की सुरक्षा और विविधता के लिए आकर्षक विकल्प हैं। साथ ही निवेशक आक्रामक रूप से एक्सपोजर बढ़ाने के बजाय मौजूदा होल्डिंग्स को रीबैलेंस करें और बढ़ती मुद्रास्फीति और तेल कीमतें आम तौर पर सोने को समर्थन देती ही हैं।

नए साल में करें नई शुरुआत कुछ बातों पर रखें फोकस शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे

निवेश, बचत और वेल्थ बनाने के लिए तैयार करें बेहतर रणनीति

जानकारी | बिजनेस डेस्क

"आज के समय में स्वास्थ्य का खर्च इतना ज्यादा हो गया है कि अगर आपको या परिवार के किसी सदस्य को अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाए तो आपकी अच्छी खासी बचाई गई रकम इलाज और अस्पताल का बिल भरने में खर्च हो सकती है। इससे आपके निवेश की योजना और निवेश के लक्ष्यों के लिए कदम आगे बढ़ा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।

नए साल पर सभी कुछ न कुछ संकल्प लेते हैं। इसलिए निवेश के क्षेत्र में भी यह समय कुछ न कुछ बेहतर रणनीति बनाने का है। नया साल 2026 शुरू हो गया है। कमाई, बचत और निवेश को लेकर भी नए साल में कुछ न कुछ रिजॉल्यूशन जरूर लें। नए निवेशक जहां नई शुरुआत के लिए विकल्प और तरीकों पर बात करेंगे, वहीं जो लोग पहले से निवेश कर रहे हैं, वो कुछ न कुछ बदलाव या डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोच रहे होंगे। हर कोई अपनी-अपनी समझ और तरीकों से अपनी फाइनेंशल प्लानिंग बनाता और उस पर आगे बढ़ता है। निवेश के तेजी से उभरते विकल्पों की बात करें तो शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नए साल की नई शुरुआत के बीच एक्सपर्ट के नजरिए से समझते हैं कि निवेशक को 2026 में किन बातों पर फोकस करना चाहिए, जिससे कि कमाई, बचत और निवेश का संतुलन बना रहे, वेल्थ बनता रहे और फाइनेंशियल लक्ष्यों को हासिल करना आसान रहे।

जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा लिया है?

निवेश की शुरुआत करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना बेहद जरूरी है कि क्या आपने पर्याप्त जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा कवर लिया है या नहीं? अगर नहीं है या पर्याप्त नहीं है, तो 2026 में सबसे पहले आप ये दोनों कवर जरूर करा लें। जीवन बीमा आपके परिवार और आप पर निर्भर लोगों को उस समय आर्थिक मदद करता है, जब कोई अनहोनी होती है। इसी तरह, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा भी रखना जरूरी है।

क्या फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा की

नए साल में सबसे अहम बात कि अपने फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा करें। ऐसा इसलिए जरूरी है कि हर साल बाजार में उठापटक, रिस्क प्रोफाइल, इनकम और खर्चों में उतार-चढ़ाव है। ऐसे में इस बात का आकलन करना अहम हो जाता कि क्या आपने निवेश के जिन एसेट क्लास में पैसा लगाया है, उनकी परफार्मेंस कैसी चल रही है, जोखिम उठाने की क्षमता कम-ज्यादा हुई है या फिर आपके फाइनेंशियल लक्ष्य हासिल करने को लेकर कैसा संकेत है?

मार्केट साइकिल समझना क्यों जरूरी?

नए साल के साथ हमेशा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाजार में निवेश का साइकिल कैसा भी हो आपको धैर्य रखना चाहिए। मार्केट साइकिल में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक बात है। कभी बाजार तेजी में होता है तो कभी मंदी में, लेकिन ऐसे समय में निवेश बनाए रखना सबसे जरूरी होता है। घबराकर निवेश निकालने से नुकसान होने की आशंका बढ़ जाती है।

धैर्य रखें, लाभ जरूर मिलेगा

ऐसे में अगर पर धैर्य रखते हैं और लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें बाजार के पूरे साइकिल का लाभ भी आपको मिलेगा। नियमित निवेश, जैसे एसआईपी, बाजार की गिरावट में भी औसत लागत कम करने में मदद करता है। मार्केट साइकिल का इतिहास बताता है कि यह समय के साथ संभलता है और नया हाई बनाता है। इसलिए शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव में पैनिक होने की बजाय लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने पर फोकस करना चहिए।

एसआईपी शुरू करें या निवेश बढ़ाएं

कहा जाता है कि नई शुरुआत करने से ही नए मौके बनते हैं। इसलिए अगर म्युचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, तो सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश शुरू कर सकते हैं। वहीं अगर पहले से निवेश कर रहे हैं तो एसआईपी की राशि बढ़ा सकते हैं। एसआईपी शुरू करना या मौजूदा निवेश को बढ़ाना दोनों ही समझदारी भरे फैसले हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए नियमित निवेश करने से बाजार की गिरावट का फायदा मिलता है और औसत लागत कम होती है। वहीं, जिन निवेशकों की कमाई स्थिर है और वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट हैं, वे अपने निवेश की राशि बढ़ाकर लंबे समय में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं। निवेश हमेशा जोखिम उठाने की क्षमता और समय सीमा के अनुसार करना जरूरी है।

लोन चुकाने के लिए न निकालें ईपीएफ से पैसा हो सकता है नुकसान

बिजनेस डेस्क

बिजनेस डेस्क। कई सैलरीड लोगों के लिए ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) की बचत से लोन चुकाना बहुत लुभावना लगता है। लोग सोचते हैं कि इससे बड़ा लोन खत्म, हर महीने का तनाव कम और जीवन कर्जमुक्त हो जाता है। लेकिन पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट चेतावनी देते हैं कि खासकर होम लोन चुकाने के लिए ईपीएफ की रकम निकालना लंबे समय में काफी महंगा पड़ सकता है, जिसे ज्यादातर लोग नजरअंदाज कर देते हैं।

ईपीएफ है रिटायरमेंट का सहारा

ईपीएफ को रिटायरमेंट के लिए बनाया गया है। ये एक मजबूरी वाला लंबे समय का निवेश है। कर्मचारी और कंपनी दोनों की तरफ से पैसा जाता है और सालाना करीब 8.25 प्रतिशत ब्याज मिलता है, वो भी कंपाउंडिंग के साथ। सबसे खास बात यह है कि ब्याज टैक्स-फ्री है। इसलिए ये सैलरीड लोगों के लिए सबसे अच्छा और कम रिस्क वाला तरीका है पैसा बढ़ाने का। ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) के नियमों के मुताबिक, ईपीएफ से निकासी बहुत सीमित है ताकि रिटायरमेंट का पैसा सुरक्षित रहे। आम लोन जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा नहीं निकाल सकते। सिर्फ हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ही कुछ खास शर्तों के साथ निकासी की इजाजत है, जैसा कि ईपीएफ स्कीम, 1952 में लिखा है।

होम लोन समय के साथ हल्का क्यों लगता है

होम लोन के मामले में समय के साथ बोझ कम होता जाता है। ईएमआई चलते-चलते ब्याज का हिस्सा घटता है और मूल रकम का हिस्सा बढ़ता है। साथ ही, आमतौर पर सैलरी बढ़ती है, इन्फ्लेशन के साथ करियर आगे बढ़ता है, तो ईएमआई का बोझ रिलेटिव तरीके से कम लगने लगता है। टैक्स का भी फायदा है। पुराने टैक्स रिजीम में प्रिंसिपल और ब्याज दोनों पर छूट मिलती है, जिससे लोन की असली लागत कम हो जाती है। नए टैक्स रिजीम में ये फायदा नहीं है, लेकिन एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ का लंबे समय तक कंपाउंडिंग इतना मजबूत है कि वो लोन जल्दी चुकाने से मिलने वाली बचत से ज्यादा फायदा देता है।

ब्याज दर का जाल

पहली नजर में आंकड़े थोड़े भ्रमित कर सकते हैं। अभी होम लोन की दरें करीब 7-7.5 प्रतिशत के आसपास हैं, जो ईपीएफ के 8.25 प्रतिशत से थोड़ी कम लगती हैं। फर्क छोटा-सा दिखता है। लेकिन ईपीएफ का ब्याज टैक्स-फ्री है, तो 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले के लिए ये 8.25 प्रतिशत करीब 11 प्रतिशत के बराबर टैक्सेबल रिटर्न देता है। इतना पोस्ट-टैक्स रिटर्न बहुत कम सुरक्षित निवेश देते हैं।

कब ईपीएफ निकालना सही

ईपीएफओ के नियमों के अनुसार, हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा सिर्फ एक बार जीवन में निकाला जा सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे कम से कम 10 साल की सदस्यता, निकासी की सीमा वेतन, बैलेंस या बकाया लोन से जुड़ी होती है। पैसा सीधे लेंडर को जाता है। एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ निकालना सिर्फ कुछ खास स्थितियों में सोचना चाहिए, जैसे: रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके हों और ईपीएफ में काफी ज्यादा बचत हो। बहुत ज्यादा कैश-फ्लो का दबाव हो और कोई दूसरा रास्ता न बचा हो। लोन की बाकी रकम कुल रिटायरमेंट कोष के मुकाबले बहुत छोटी हो। ऐसे मामलों में भी पहले अच्छे से कैलकुलेशन करना और किसी प्रोफेशनल से सलाह लेना बहुत जरूरी है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 6% घटा, पर फ्लेक्सी-कैप ने बनाया रिकॉर्ड

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड पर भी दिखा

रिपोर्ट | बिजनेस डेस्क

दिसंबर में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड निवेश पर भी साफ नजर आया। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया यानी एएमएफआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 6% घटकर 28,054 करोड़ रुपये रह गया। जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 29,911 करोड़ रुपये था। अगर साल-दर-साल के आधार पर तुलना करें, तो गिरावट और भी साफ दिखती है। दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में इक्विटी फंड्स में निवेश 32% कम रहा। पिछले साल दिसंबर में इक्विटी फंड्स में 41,155 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। हालांकि पूरे कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो निवेशकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 3.03 लाख करोड़ रुपये लगाए।

फ्लेक्सी-कैप फंड्स पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की कुल 11 कैटेगरी में से 9 में दिसंबर के दौरान निवेश आया। सिर्फ डिविडेंड यील्ड फंड और ईएलएसएस फंड्स से पैसा निकला। इन सभी कैटेगरी में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे आगे रहे। इस कैटेगरी में दिसंबर के दौरान 10,019 करोड़ रुपये का नेट निवेश हुआ, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। निवेशक में इस बात पर ज्यादा भरोसा नजर आया कि फ्लेक्सी-कैप फंड्स के मैनेजर बाजार की स्थिति के हिसाब से लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयर्स में निवेश को एडजस्ट कर सकते हैं।

मिडकैप और लार्ज एंड मिडकैप फंड्स भी चर्चा में

फ्लेक्सी-कैप के बाद मिडकैप फंड्स दूसरे नंबर पर रहे। दिसंबर में इन फंड्स में 4,175 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं लार्ज एंड मिडकैप फंड्स में 4,093 करोड़ रुपये की आमद दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक अभी भी ग्रोथ की संभावनाओं वाले शेयरों में रुचि बनाए हुए हैं।

सेक्टोरल और स्मॉलकैप फंड्स में गिरावट

सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स के लिए दिसंबर थोड़ा फीका रहा. इन फंड्स में निवेश महीने-दर-महीने आधार पर 49% घटकर 945 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 1,864 करोड़ रुपये था। स्मॉलकैप फंड्स में भी 13% की गिरावट देखने को मिली. दिसंबर में इन फंड्स में 3,823 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। बाजार की वैल्यूएशन और अस्थिरता को देखते हुए निवेशक स्मॉलकैप से थोड़ा सतर्क नजर आए।

ईएलएसएस और डिविडेंड यील्ड फंड्स से पैसा निकला

दिसंबर में टैक्स सेविंग ईएलएसएस फंड्स से 717 करोड़ की निकासी हुई। वहीं, डिविडेंड यील्ड फंड्स से 254 करोड़ बाहर चले गए। निवेशकों की बदली प्राथमिकताओं का असर यहां साफ दिखा।

पूरे साल 2025 में कौन सी इक्विटी कैटेगरी रही आगे

कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो फ्लेक्सी-कैप फंड्स पूरे साल निवेशकों की पहली पसंद रहे। इस कैटेगरी में साल भर में 80,978 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद स्मॉलकैप फंड्स में 52,321 करोड़ रुपये और मिडकैप फंड्स में 49,939 करोड़ की नेट इनफ्लो दर्ज की गई।

डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर निकाले गए पैसे

जहां इक्विटी में निवेश धीमा पड़ा, वहीं डेट म्यूचुअल फंड्स में दिसंबर के दौरान भारी निकासी देखने को मिली। इस महीने डेट फंड्स से कुल 1.32 लाख करोड़ रुपये बाहर निकल गए। नवंबर में यह निकासी 25,692 करोड़ रुपये थी। दिलचस्प बात यह है कि दिसंबर 2024 में भी डेट फंड्स से करीब 1.27 लाख करोड़ रुपये की निकासी हुई थी।

16 में से 14 डेट फंड कैटेगरी में आउटफ्लो

डेट फंड्स की 16 कैटेगरी में से सिर्फ ओवरनाइट फंड्स और फ्लोटर फंड्स में निवेश आया। बाकी 14 कैटेगरी में पैसा निकला। लिक्विड फंड्स से सबसे ज्यादा 47,307 करोड़ रुपये की निकासी हुई। इसके बाद मनी मार्केट फंड्स से 40,464 करोड़ रुपये बाहर निकले।

साल भर में डेट फंड्स का हाल

पूरे 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स में कुल 1.19 लाख करोड़ रुपये का नेट निवेश आया। मनी मार्केट फंड्स इस दौरान सबसे आगे रहे, जिनमें 66,993 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं गिल्ट फंड्स में पूरे साल में 5,680 करोड़ रुपये की सबसे ज्यादा निकासी दर्ज की गई।

हाइब्रिड फंड्स में निवेश भी घटा

दिसंबर में हाइब्रिड फंड्स में निवेश 19% घटकर 10,755 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 13,299 करोड़ रुपये था, जबकि दिसंबर 2024 में हाइब्रिड फंड्स में सिर्फ 4,369 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। पूरे 2025 में हाइब्रिड फंड्स में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया। हाइब्रिड फंड्स की 6 कैटेगरी में से कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स को छोड़कर सभी में निवेश पॉजिटिव रहा। मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में दिसंबर में नेट इनफ्लो 7,425 करोड़ रुपये का हुआ। इसके बाद एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स में 1,513 करोड़ रुपये का निवेश आया।

पैसिव फंड्स और ईटीएफ में उछाल

इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसी दूसरी स्कीम्स में दिसंबर के दौरान निवेश में 74% की तेज बढ़ोतरी हुई। नवंबर में जहां इन फंड्स में 15,385 करोड़ रुपये आए थे, वहीं दिसंबर में यह आंकड़ा बढ़कर 26,723 करोड़ रुपये हो गया। दिसंबर 2024 में पैसिव फंड्स में कुल निवेश सिर्फ 784 करोड़ रुपये था, ऐसे में इस साल की बढ़त काफी मजबूत मानी जा रही है।

खबर संक्षेप

खिलाड़ियों को खेल उपकरण उपलब्ध कराने की मांग

नारनौल। बहुजन समाज पार्टी के नेता प्रमुख समाजसेवी अतरलाल एडवोकेट ने हरियाणा सरकार व जिला खेल अधिकारी से अटेली हल्के के गांवों के खिलाड़ियों को खेल उपकरण व सामग्री उपलब्ध कराने की मांग की है। अतरलाल ने कहा कि उन्हें छिथरोली, बाघोत, सिहोर, उन्हाणी, चेलावास, सेहलंग, पोता, स्याणा, नौताना, खेड़ी तलवाना, अगिहार, खरकड़ा बास, धनौन्दा, पाथेड़ा, सुन्दरह, भोजावास, दौंगड़ा जाट, दौंगड़ा अहीर सहित अनेक गांवों के लोगों से शिकायत मिली है कि उनके गांवों के खिलाड़ियों को पिछले चार से पांच साल से खेल विभाग की तरफ से खेल उपकरण व सामग्री नहीं मिली है।

केंद्रीय मंत्री का बयान दुर्भावनापूर्ण

कनीना। केंद्रीय मंत्री की ओर से हाल ही में टीवी चैनल को दिए गए साक्षात्कार में उनकी स्पष्टवादिता के बयानों से प्रदेश की सियासत में भूचाल आ गया है। राव साहब ने एक साथ कई राजनेताओं पर एक साथ निशाना साधा है, जिन्हें लेकर अब कार्यकर्ता तरह-तरह के मायने निकाल रहे हैं। बादशाहपुर के विधायक एवं मंत्री, नांगल चैधरी के पूर्व विधायक तथा अटेली हलके के पूर्व विधायक के कार्यकर्ता उन पर लगाए गए आरोपों को भ्रामक व दुर्भावनापूर्ण बता रहे हैं।

सैन्य सम्मान के साथ दी विदाई

जम्मू कश्मीर में पेट्रोलिंग के दौरान खाई में गिरे सूबेदार हीरालाल शहीद

बेटे ने कहा कि उन्हें पिता की शहादत पर गर्व है। वह भी सेना में जाकर देश की सेवा करेगा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिले का एक और वीर सपूत ने देश की सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया है। भारतीय सेना की आतंकवाद विरोधी विशेष इकाई राष्ट्रीय राइफल्स में तैनात सूबेदार हीरालाल उत्तरी कश्मीर के बारामुला सेक्टर में पेट्रोलिंग के दौरान शहीद हो गए। तिरंगे में लिपटा उनका पार्थिव शरीर पैतृक गांव अकबरपुर पहुंचा। कुछ देर के लिए उनके शरीर को अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। इसके बाद पार्थिव शरीर को वहां से श्मशान घाट ले जाया गया। जहां पूरे सैन्य सम्मान के साथ उन्हें विदाई दी गई। बेटे गजेंद्र ने मुखाग्नि दी। बेटे ने कहा कि उन्हें पिता की शहादत पर गर्व है। वह भी सेना में जाकर देश की सेवा करेगा।

सूबेदार हीरालाल नौ जनवरी को अपने साथियों के साथ एक बेहद संवेदनशील व दुर्गम पहाड़ी इलाके में नियमित पेट्रोलिंग पर थे। बर्फ जमे व फिसलन भरे संकरे रास्ते पर अचानक संतुलन बिगड़ने के कारण वह खाई में जा गिरे। इस हादसे में उन्होंने मौके पर ही दम तोड़ दिया। नांगल चौधरी थाना क्षेत्र के गांव अकबरपुर के निवासी हीरालाल का जन्म 27 अप्रैल 1981 को हुआ था। वह 30 जनवरी 2000 को भारतीय सेना में भर्ती हुए। करीब 23 वर्षों की सेवा के दौरान उन्होंने जम्मू कश्मीर सहित कई कठिन क्षेत्रों में ड्यूटी निभाई तथा 23 मई 2023 को सूबेदार के पद पर पदोन्नत हुए। सूबेदार हीरालाल के 88 वर्षीय पिता हरिराम गांव में रहते हैं और अक्सर अस्वस्थ रहते हैं। वह हार्ट के मरीज हैं।

बेटे की शहादत की खबर से परिवार में शोक का माहौल है। शहीद की पत्नी रोशनी देवी गृहिणी हैं। बेटा गजेंद्र आईआईटी पुणे में पढ़ाई कर रहा है व बेटी स्नेहलता दिल्ली में नर्सिंग की पढ़ाई कर रही है।

नारनौल। विलाप करते शहीद के परिजन व शहीद की बेटी पिता का शव देखकर फूट-फूटकर रोने लगी। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। (इनसेट में) शहीद हीरालाल व शहीद हीरालाल को सलामी देते जवान। फोटो: हरिभूमि

सेना की टुकड़ी ने दी अंतिम सलामी

अकबरपुर गांव में सैन्य सम्मान के साथ शहीद का अंतिम संस्कार किया गया। सेना की टुकड़ी उन्हें अंतिम सलामी दी। ग्रामीणों ने कहा अकबरपुर के लिए यह गर्व व गम दोनों का पल है। जब एक बेटा देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर अमर हो गया। अंतिम संस्कार में नांगल चौधरी की विधायक मंजू चौधरी, नांगल चौधरी पंचायत समिति अध्यक्ष कर्मपाल, डीएसपी सुरेश कुमार, एसएचओ भगत सिंह, पूर्व चेयरमैन प्रवीण चौधरी, विकास यादव बड़कोदा, विनोद यादव भील, प्रमोद ताखर, बलदेव सिंह चहल सहित अनेक लोग शामिल हुए।

महेंद्रगढ़। शिक्षा सदन पंचकूला में डायरेक्टर से मीटिंग करता हेमसा प्रतिनिधि मण्डल।

हेमसा प्रतिनिधिमंडल की डायरेक्टर के साथ हुई बैठक

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा एजुकेशन मिनिस्ट्रीयल स्टाफ एसोसिएशन के सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की प्रांतीय प्रधान संदीप सांगवान के नेतृत्व में डायरेक्टर सैकेंडरी के साथ 11 सूत्रीय मांगपत्र पर शुक्रवार देर सायं तक वार्ता मीटिंग चली।

यह जानकारी देते हुए हेमसा प्रदेश प्रेस प्रवक्ता सुजान मालड़ा ने बताया कि महासचिव हितेंद्र सिहाग ने मांगपत्र प्रस्तुत करते हुए लिपिक वर्गीय कर्मचारियों का पक्ष रखा तथा बताया कि शिक्षा विभाग फील्ड मिनिस्ट्रीयल स्टाफ कर्मचारियों की लंबित समस्याएं ज्यों की त्यों ही नहीं हैं, बल्कि बढ़ती जा रही हैं। डायरेक्टर ने बिंदुवार चर्चा करते हुए कहा कि 11 बिंदुओं में से 6 बिंदु तो सरकार स्तर की हैं। इनका निपटान सरकार स्तर पर किया जाना है। हितेंद्र सिहाग ने सहायक, उपाधीक्षक, अधीक्षक पद पर पदोन्नति करने का पक्ष रखा। इस पर उन्होंने कहा कि पदोन्नति फाईलें पाईप लाईन में हैं। जल्द ही पदोन्नति सूची जारी की जाएगी। महासचिव ने कहा कि नियमों को ताक पर रखकर जबरन थौपी गई ऑनलाईन ट्रांसफर ड्राईव का शिकार कर्मी घर से बेघर कर दिया गया है। साढ़े पांच साल बीत जाने के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हुई।

संगठन लगातार मांग करता आ रहा है। उन्होंने कहा कि फील्ड के कर्मचारियों के पदोन्नति के अवसर न के बराबर हैं। इसीलिए सभी सीनियर सैकेंडरी स्कूलों में सहायक, बीईओ में आंकड़ा सहायक, उपाधीक्षक, डीईईओ में अधीक्षक, डीईओ में स्थापना अधिकारी का पद स्वीकृत किया जाए, लेकिन कोई निर्णय नहीं निकला। बाद में प्रांतीय प्रधान संदीप सांगवान की अध्यक्षता में फैसला लिया कि 11 फरवरी को विभागीय मांगों को लेकर डायरेक्टर दफ्तर पर हल्ला बोल प्रदर्शन करेंगे।

सामाजिक संस्था ने सीएम से की अर्बन एक्ट की धारा 7-ए हटवाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोसली

सामाजिक संस्था प्रेरणा ने मुख्यमंत्री नायब सैनी को पत्र लिखकर कोसली तहसील क्षेत्र के गांवों में लगी अर्बन एक्ट की धारा 7ए को हटाए जाने की मांग की है। संस्था ने पत्र में कहा कि इस धारा के कारण कोसली, भाकली, भुरथला, सहादत नगर, नठेड़ा, कान्हड़वास गांव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। क्षेत्र के इन सभी गांवों से इस धारा को वापस लिया जाना बहुत जरूरी है। गांवों में किसानों के पास कृषि के अलावा आय का कोई साधन नहीं होता। कई बार किसान के सामने ऐसे हालात बन जाते हैं कि कृषि से किसी साल कोई आय नहीं हो पाती। ऐसे में किसान को अपना गुजारा करने के लिए भी कर्ज लेना पड़ता है। कोसली तहसील के कोसली, कान्हड़वास, भुरथला, भाकली, नठेडा, सादतनगर गांवों को सरकार ने 16 वर्ष से अर्बन एक्ट की धारा 7ए में शामिल कर रखा है। इसके तहत कोई भी किसान अपनी जमीन को बिना मंजूरी के नहीं बेच सकता। कई किसान जमीन को ऐसी स्थिति में बेचते हैं जब उन्हें पैसे की सख्त जरूरत होती है। बीमारी का इलाज, शादी ब्याह के खर्च और बच्चों की पढ़ाई के लिए भी कई किसान अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना चाहते हैं, लेकिन किसानों को अपनी जमीन का एक टुकड़ा बेचने से पहले नगर योजनाकार विभाग एनफोर्समेंट कार्यालय में जाकर एनओसी लेनी पड़ती है। जहां 7ए धारा लागू नहीं होती वहां पर किसानों को किसी प्रकार की एनओसी की जरूरत नहीं होती है। वहां किसान आसानी से अपनी जमीन की रजिस्ट्री करा सकते हैं। कोसली में न तो नगरपालिका है, न विकास खंड है। इसके बावजूद यहां धारा 7ए लागू कर दी गई है। जिससे किसानों को परेशानी हो रही है।

जमीन की खरीद-फरोख नहीं कर सकते

इस धारा के लागू होने से न तो कोई किसान अपनी जमीन बेच सकता है और न ही कोई खरीद सकता है। इस पाबंदी से क्षेत्र के किसानों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कुछ किसानों के पास तो एक एकड़ से भी कम जमीन है। अगर उसे अपनी जमीन बेचनी है तो मंजूरी लेनी पड़ती है। संस्था के ओमप्रकाश ने कहा कि यह धारा किसानों के लिए परेशानी का सबब बन गई है। संस्था ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से कोसली क्षेत्र के गांवों में लगी 7ए को हटाने की मांग की है जिससे ग्रामीणों को समस्या से निजात मिल सके।

आईजीयू की विषम सेमेस्टर परीक्षाएं संपन्न

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर (रेवाड़ी) द्वारा आयोजित विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं दोनों महाविद्यालयों में शांतिपूर्वक, नकल-रहित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो चुकी हैं। यह बात राजकीय महिला महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर महेंद्र सिंह एवं राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर विजय यादव ने संयुक्त रूप से बताई। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की विषम सेमेस्टर की परीक्षाएं गत 11 दिसंबर 2025 से प्रारंभ होकर आठ जनवरी तक चली। परीक्षाओं का संचालन शरदकालीन अवकाश के दौरान भी पूर्ण अनुशासन, ईमानदारी एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। प्राचार्यों ने यह भी बताया कि अब 12 जनवरी से सम सेमेस्टर की कक्षाओं का अध्ययन कार्य नियमित रूप से प्रारंभ किया जाएगा। उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं से कहा है कि वे कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहें एवं शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि कोई विद्यार्थी लगातार सात दिन तक अनुपस्थित रहता है तो उसका नाम महाविद्यालय से काट दिया जाएगा तथा उसे विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी। अतः सभी विद्यार्थी समय पर कक्षाओं में उपस्थित होकर अपना पाठ्यक्रम निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करें। सभी विद्यार्थी महाविद्यालय का पहचान पत्र (आई-कार्ड) अनिवार्य रूप से साथ लेकर आएं। बिना आई-कार्ड के महाविद्यालय परिसर में प्रवेश पूर्णतः वर्जित रहेगा। इसके साथ ही दोनों प्राचार्यों ने सभी शिक्षण स्टाफ सदस्यों को निर्देश दिए कि वे समय सारणी के अनुसार नियमित रूप से कक्षाएं संचालित करें तथा निर्धारित अवधि में पाठ्यक्रम पूर्ण करवाएं।

सरपंचों को ठीकरी पहरा लगाने के दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

थाना सदर के प्रबंधक निरीक्षक देवेंद्र कुमार ने चौकी दौंगड़ा अहीर पहुंचकर क्षेत्र के विभिन्न गांवों के सरपंचों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना था।

बैठक के दौरान निरीक्षक देवेंद्र कुमार ने रात के समय होने वाली चोरी की वारदातों और अन्य आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए गांवों में ठीकरी पहरा व्यवस्था को सक्रिय करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके साथ ही थाना प्रबंधक ने सुरक्षा की दृष्टि से गांव में बाहर से आने वाले फेरीवालों और संदिग्ध व्यक्तियों पर कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए, ताकि किसी भी बाहरी अपराधी तत्व को गांव में पनाह न मिल सके।

पुलिस अधिकारियों ने उपस्थित सरपंचों और ग्रामीणों को नशाखोरी के खिलाफ अभियान चलाने और वर्तमान समय के साइबर अपराधों के प्रति जागरूक रहने का पाठ पढ़ाया। इस अवसर पर दौंगड़ा अहीर चौकी इंचार्ज एएसआई मदन भी विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने भी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस का सहयोग करने की अपील की।

महेंद्रगढ़। सरपंचों की मीटिंग लेते थाना इंचार्ज। फोटो: हरिभूमि

नप के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल पांचवें दिन भी जारी

नारनौल। नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों ने पांचवें दिन काम छोड़ हड़ताल जारी रखी। कर्मचारियों में नगर प्रशासन से अभी तक कोई सहमति नहीं बनी, जिसमें कर्मचारियों ने अपनी हड़ताल जारी रखी। आंदोलनकारी कर्मचारियों का कहना है कि समान काम समान वेतन वर्ष 2017 से 2023 तक का बकाया एरियर का भुगतान कर्मचारियों के खाते में जाएगा, उसके बाद ही कर्मचारी काम पर जाएंगे। अन्यथा काम छोड़ हड़ताल जारी रहेगी। जिला प्रधान राहुल सारवान, महावीर प्रसाद, सुरेश कुमार जैदिया, सर्व कर्मचारी संघ राज्य सचिव महेंद्र बोयत, रमेश कुमार, विक्रांत, राजेश, कमल, आशु, नीरज, मनोज कुमार, भूपेंद्र सिंह, भीम सिंह, राजेश, मनोज, विनोद, नीरज, नरेश कुमार, प्रताप सिंह, रिंकू, महिपाल सिंह, संतलाल, जसवंत सिंह, धर्मेन्द्र कुमार, अमित कुमार, नरवीर सिंह, संजय कुमार, विक्की, मनोज देवी, बबली, कांता, निर्मला, सुनीता, संगीता, ममता देवी आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

स्वयंसेवकों को नशे और कानूनी अधिकारों के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना के सातवें दिन शिविर का शुभारंभ जिला विधिक साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत एडवोकेट पूजा यादव ने किया। उन्होंने स्वयंसेवकों को नशे की लत के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी तथा विद्यार्थियों को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक किया। खंड विधिक साक्षरता अधिकारी इंद्रजीत यादव ने स्वयंसेवकों को अपने कानूनी अधिकारों के सही एवं प्रभावी उपयोग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के राजनीति विज्ञान विभाग से प्रोफेसर रमेश कुमार ने शिरकत की। उन्होंने 'व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण' विषय पर स्वयंसेवकों को संबोधित किया और बताया कि एक स्वयंसेवक अपने आचरण, अनुशासन एवं सामाजिक दायित्वों के निर्वहन से राष्ट्र निर्माण में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

महेंद्रगढ़। मुख्य अतिथि को पौधा भेंटकर सम्मानित करते हुए।

बाबा खेतानाथ गोवंश में लगाई सवामणी

मंडी अटेली। सिहमा में मकर संक्रांति के उपलक्ष पर बाबा खेतानाथ गोवंश उपचारशाला में सुरेंद्र सिंह (दिल्ली पुलिस) ने गायों के लिए लगाई सवामणी लगाई। इस मौके लॉर्ड कृष्णा स्कूल के चेयरमैन पृथ्वी सिंह ने गायों के लिए सवामणि में उपयोग होने वाली बड़ी कड़ाही एवं पलटा गोवंश उपचारशाला में भेंट किया। इस मौके पर सुरेंद्र सिंह ने बताया कि गायों में देवी-देवताओं का वास होता है। मनुष्य को एक गाय अवश्य पालनी चाहिए। इस मौके पर मास्टर हनुमान सिंह, विनोद कुमार, सतीश अटाली, नीरज, सत्यप्रकाश, अभिषेक, नवीन, आकाश, यश व चम्मन आदि मौजूद रहे।

अजा के सदस्यों को कौशल प्रशिक्षण आवेदन की अंतिम तिथि 20 जनवरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम के माध्यम से हरियाणा कौशल विकास मिशन द्वारा हरियाणा राज्य के अनुसूचित जाति वर्ग के पात्र युवाओं को विभिन्न ट्रेडों में निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। आवेदन की अंतिम तिथि 20 जनवरी है। निगम के जिला प्रबंधक पवन कुमार ने बताया कि प्रशिक्षण सहायक ब्यूटी थेरेपिस्ट, सहायक हेयर ड्रेसर एवं स्टाइलिस्ट (पुरुष/महिला), ब्राइडल फैशन एवं पोर्टफोलियो मेकअप आर्टिस्ट (केवल महिला), स्व-रोजगार दर्जी (पुरुष/महिला) तथा सहायक फॉल्स सीलिंग एवं ड्राईवॉल इंस्टॉलर (केवल पुरुष) ट्रेडों में दिया जाएगा। आवेदक हरियाणा राज्य के अनुसूचित जाति वर्ग से संबंधित हो तथा परिवार पहचान पत्र में सत्यापित वार्षिक आय 3 लाख रुपये तक होनी चाहिए।

योग्यता अनुसार 8वी अथवा 10वीं पास होना आवश्यक है। इच्छुक अभ्यर्थी आधार कार्ड, परिवार पहचान पत्र, शैक्षणिक प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र एवं दो पासपोर्ट साइज फोटो सहित कार्यालय शॉप नंबर-10 पहली मंजिल नई अनाज मंडी में आवेदन जमा करा सकते हैं।

यदुवंशी कॉलेज में विश्व हिन्दी दिवस मनाया

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज पटीकरा में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य बजरंग लाल ने बताया कि हर वर्ष 10 जनवरी को यह दिवस इसलिए मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन 1975 में पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित किया गया था। यह दिवस हमें हमारी समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विरासत की याद दिलाता है। हिन्दी केवल हमारी मातृभाषा नहीं, बल्कि यह भाषा हमें एकता, भाईचारा और आपसी समझ का संदेश देती है। यदुवंशी ग्रुप के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने बताया कि विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य है कि हम हिन्दी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रचार प्रसार करें तथा इसे और अधिक सम्मान व पहचान दिलाएं। हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, इतिहास व राष्ट्रीय पहचान की भी परिचायक है। इस मौके पर संस्था निदेशिका सुरेश यादव, डॉ. प्रदीप यादव मौजूद रहे।

महेंद्रगढ़। शराब नष्ट करती पुलिस। फोटो: हरिभूमि

पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर नष्ट की अवैध शराब

महेंद्रगढ़। जिला पुलिस द्वारा अवैध शराब और मादक पदार्थों के निस्तारण की प्रक्रिया के तहत थाना शहर में एक्साइज एक्ट के विभिन्न मामलों में जब्त की गई शराब को नष्ट किया गया। यह कार्रवाई माननीय न्यायालय के आदेशों के अनुपालन में और संबंधित मुकदमों के फैसलाशुदा होने के बाद पूरी कानूनी प्रक्रिया अपनाते हुए की गई। पुलिस ने महेंद्रगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से छापेमारी के दौरान यह अवैध शराब बरामद की थी, जिसे मालखाने में सुरक्षित रखा गया था। नष्ट की गई शराब की खेप में 45 पेटी व पांच बोतल देसी शराब, 67 पेटी, 10 बोतल अंग्रेजी शराब, 352 पेटी, आठ बोतल बीयर तथा 21 बीयर कैन शामिल थे। न्यायालय से मंजूरी मिलने के बाद पुलिस टीम ने ड्यूटी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में एक खाली मैदान में इस सारी सामग्री को नियमानुसार नष्ट कराया। पुलिस विभाग द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि एक्साइज एक्ट और आईपीसी के तहत दर्ज मामलों में जब्त सामान की कानूनी प्रक्रिया पूरी होते ही उसका उचित निस्तारण कर दिया जाए, ताकि मालखाने का प्रबंधन सुचारू रूप से चलता रहे।

धर्म-कर्म श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन किया भगवान के अवतारों का वर्णन

कथा के पठन व श्रवण से होती है मोक्ष की प्राप्तिः पंडित रासबिहारी

कलश और शोभायात्रा के बाद किया कथा का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

कनीना मंडी स्थित विश्वकर्मा धर्मशाला में आयोजित की जा रही सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन भगवान नारायण व श्रीकृष्ण के अवतारों का वर्णन किया गया। कथा का शुभारंभ शुक्रवार को कलश व शोभायात्रा के बाद किया गया था। कथा में अशोक गुप्ता सपत्नीक यजमान की भूमिका निभा रहे हैं। मकर संक्रांति पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित इस कथा का 15 जनवरी को सुबह सवा नौ बजे हवन व प्रसाद वितरण के बाद समापन किया जाएगा। कथा का वाचन पंडित रामबिहारी की ओर से दोपहर एक बजे से सायं चार बजे तक किया जा रहा है। उन्होंने कथा में बताया कि श्रीमद्भागवत कथा, भागवत पुराण हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। जिसमें मुख्य रूप से भगवान नारायण व श्रीकृष्ण के अवतारों का वर्णन है। जिसे भक्ति योग, ज्ञान और वैराग्य का मार्ग माना जाता है। यह कथा शुकदेव मुनि की ओर से राजा परीक्षित को सुनाई गई थी। जिन्होंने इसे महर्षि वेदव्यास से सुना था और इसमें कई प्रेरक उपाख्यानों का अद्भुत संग्रह है। यह कथा आत्मा की शुद्धि, पाप मुक्ति और ईश्वर की कृपा पाने का एक दिव्य माध्यम मानी जाती है, जिसे सात दिनों या अन्य निर्धारित अवधियों में सुना पढ़ा जाता है।

कनीना। श्रीमद्भागवत कथा सुनाते आचार्य रासबिहारी। फोटो: हरिभूमि

कथा का सार व महत्व

कथा में भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों, यथा राम, कृष्ण व उनकी लीलाओं का विस्तृत वर्णन है, जो भक्तों को आनंद और ज्ञान देते हैं। यह ग्रंथ भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के सिद्धांतों का समन्वय करता है, जिससे मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। परम्परागत रूप से इसे महर्षि वेदव्यास की ओर से रचा गया माना जाता है और शुकदेव मुनि ने इसे राजा परीक्षित को सुनाया था। सुकेदव मुनि कह सुनो परीक्षित समय बड़ा बलवान प्रेम से धरो हरि का ध्यान पर केंद्रित है। इसमें भक्त प्रहलाद की कथा, गजेन्द्र मोक्ष, समुद्र मंथन, मनु वंश और अन्य कई शिक्षाप्रद कहानियां शामिल हैं।

कथा की उत्पत्ति

ऋषि श्रृंगी के श्राप के कारण, राजा परीक्षित को सातवें दिन तक्षक नाग के काटने से मृत्यु का श्राप मिला था। अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुएए उन्होंने गंगा किनारे बैठकर शुकदेव मुनि से अपने कल्याण का मार्ग पूछा। शुकदेव जी ने उन्हें श्रीमद्भागवत कथा सुनाई। जिससे राजा परीक्षित को परम शांति और मोक्ष की प्राप्ति हुई। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा भगवान के स्वरूप, लीलाओं और परम सत्य के ज्ञान का वह अमृत है, जो जीवन को पवित्र कर मोक्ष की ओर ले जाता है। इस मौके पर व्यापार मंडल के प्रधान पूर्णचंद सहरावत, राजसिंह उन्हाणी, सुरेश सेठ, वेदप्रकाश जांगिड़ उपस्थित थे।

दोपहर बाद धूप खिलने के बाद मिली राहत, अगले सप्ताह के अंत में मौसम में बदलाव के आसार

शुक्रवार की रात रही सबसे ठंडी

कोहरे ने रोकी वाहनों की रफ्तार, पारा गिरने से ठंड पीक की ओर बढ़ी

कोहरे के कारण रेल और सड़क यातायात बुरी तरह प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जनवरी की दूसरे सप्ताह में पारा गिरने से ठंड पीक की ओर बढ़ने लगी है। रात का तापमान तेजी से गिर रहा है, जिससे पाला जमने की आशंका बन गई है। तेज बर्फीली हवाओं ने जनजीवन प्रभावित किया हुआ है। कोहरे के कारण रेल और सड़क यातायात दोनों प्रभावित हो रहे हैं। दोपहर बाद तेज धूप निकलने के बाद राहत जरूर मिलती है, लेकिन सुबह के समय ठंड का प्रकोप जमकर परेशान करता है। आने वाले सप्ताह के अंत में मौसम में बदलाव की संभावना जताई जा रही है।

शनिवार को सुबह के समय घना कोहरा छाया रहा। कुछ स्थानों पर विजिबिलिटी 20 मीटर से भी कम रही। सड़क पर वाहनों की रफ्तार मंद पड़ गई। खासकर दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर फर्राटा भरने वाले वाहन रेंगकर चलते हुए नजर आए। कई एरिया में जीरो विजिबिलिटी ने वाहन चालकों को जमकर परेशान किया। वाहन चालक एक-दूसरे के पीछे लाइटें जलाकर वाहन चलाते रहे।

रेवाड़ी। शनिवार को आसमान व सड़कों पर छाया घना कोहरा तथा एक खेत में पकाव की ओर अग्रसर सरसों की फसल। फोटो : हरिभूमि

सड़कों पर घना कोहरा सुबह 10 बजे तक बना रहा। इसके बाद कोहरा साफ होना शुरू हो गया। कोहरे के कारण आधा दर्जन से अधिक लंबी दूरी की ट्रेनों का संचालन आधे घंटे से 2 घंटे तक की देरी से हुआ। इससे रेल यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। जंक्शन से संचालित होने वाली ट्रेनों के समय पर ज्यादा असर नहीं रहा।

ठंड के चलते दोपहर तक बाजार से लेकर सड़कों तक पर सन्नाटा छाया रहा। ज्यादा जरूरी काम नहीं होने वाले लोग घरों में ही दुबके रहे। इस समय पहाड़ी क्षेत्रों की बर्फबारी का असर मैदानी इलाकों में देखने को मिल रहा है।

फसलों की नियमित सिंचाई जरूरी

रात का पारा गिरने से पाला जमने की आशंका बनी रहती है। इस समय किसानों को फसलों की हल्की और नियमित सिंचाई करते रहना चाहिए। सिंचाई के कारण जमीन का तापमान बढ़ने से पाला नहीं जमता। पाला जमना शुरू होने के बाद किसानों को शाम के समय खेतों की मेंढ पर धुआं करना चाहिए। इससे फसल पर पाला नहीं जमेगा।

-डा. नरेश यादव, कृषि अनुसंधान केंद्र, बावल।

ठंडी हवाओं ने ठंड को पीक की ओर बढ़ाना शुरू कर दिया है।

कोहरे का असर कम

बीते शुक्रवार की रात इस सीजन की सबसे ठंडी रात रही। रात का तापमान 0.4 डिग्री की गिरावट के साथ 2.4 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। दिन का तापमान शनिवार को 0.5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के साथ 18.0 डिग्री दर्ज किया गया। सुबह 11 बजे के बाद सूरज की चमक ने कोहरे का असर कम कर दिया। इसके बाद तेज धूप ने कड़ाके की ठंड का असर कम कर दिया, परंतु 10 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चलने वाली हवाओं ने खूब परेशान किया। मौसम विभाग का अनुमान है कि दिन-रात के तापमान में अभी और गिरावट आ सकती है, जिससे तापमान जमाव बिंदू तक पहुंच सकता है।

प्रदूषण का स्तर गिरा

बीते वीरवार को जिले के कई भागों में हुई बूंदाबांदी के कारण प्रदूषण का स्तर कुछ हद तक कम हुआ है। शनिवार की शाम धारूहेड़ा का एक्यूआई 176 दर्ज किया गया, जो इससे पहले 300 के पार पहुंच गया था। सुबह के समय हवा में नमी के कारण प्रदूषण का स्तर आने वाले दिनों में बढ़ सकता है। अच्छी बारिश के बाद ही प्रदूषण साफ होने की संभावना है। प्रदूषण के स्तर में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। सुबह के समय वातावरण में नमी ज्यादा रहने से एक्यूआई बढ़ जाता है। दोपहर बाद धूप निकलते ही इसमें कमी आ जाती है।

बरसात का इंतजार

मौसम इस समय पूरी तरह रबी फसलों के लिए अनुकूल बना हुआ है। प्रमुख फसलों सरसों और गेहूं का तेजी से विकास हो रहा है। अगेती सरसों में फलियां आना शुरू हो गया है। दोनों फसलों को इस समय सिंचाई की नितांत आवश्यकता है, परंतु बड़े किसानों को एक साथ दोनों फसलों की सिंचाई में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दो माह से किसान बारिश का इंतजार कर रहे हैं, परंतु इंद्रदेवता नाराज नजर आ रहे हैं। इस समय अगर अच्छी बरसात होती है, तो इससे दोनों फसलों को काफी लाभ मिलेगा।

ठंड से बचने के लिए एडवाइजरी की करें पालना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शीत लहर व अत्यधिक सर्दी के चलते शीत-घात से बचाव को लेकर हरियाणा सरकार द्वारा विशेष एडवाइजरी जारी की है। डीसी अभिषेक मीणा ने आम नागरिकों से शीत लहर व सर्दी से बचाव के लिए एडवाइजरी की पूर्ण रूप से पालना करते हुए सावधानी बरतने की अपील की है। डीसी ने बताया कि आमजन सावधानी बरतकर सर्दी से अपना व अपने पशुओं का बचाव कर सकते हैं। सर्दी से बचाव के लिए आमजन अपने पास पर्याप्त कपड़ों का स्टॉक करें। घर में ठंडी हवा का प्रवेश रोकने के लिए दरवाजों तथा खिड़कियों को ठीक से बंद रखें। जितना संभव हो सके घर के अंदर रहें और ठंडी हवा, बारिश, बर्फ के संपर्क में आने से बचने के लिए कम से कम यात्रा करें। गर्म कपड़े पहनें ताकि ठंड बिल्कुल न लगे। खुद को सूखा रखें और पानी में भीगने से बचें। शरीर की गरमाहट बनाए रखने के लिए अपने सिर, गर्दन, हाथ और पैर की उंगलियों को पर्याप्त रूप से ढककर रखें। गीले कपड़े तुरंत बदलें। हाथों में दस्ताने रखें। फेफड़ों को बचाने के लिए मास्क का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि शीत-घात से बचने के लिए मौसम पूवार्नुमान के लिए रेडियो, टीवी, समाचार पत्र जैसे सभी मीडिया प्रकाशन का ध्यान रखें ताकि यह पता चल सके कि आगामी दिनों में शीतलहर की संभावना है या नहीं। उन्होंने हिदायत देते हुए कहा कि बंद कमरों में कोयले को जलाना खतरनाक हो सकता है। शीतलहर के दौरान पशुधन को जीवन यापन के लिए अधिक भोजन की आवश्यकता होती है।

बचाव के लिए इन बातों का रखें ध्यान

मीणा ने बताया कि सिर पर टोपी या मफलर पहने, स्वास्थ्य वर्धक भोजन लें। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार पर्याप्त रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए विटामिन सी से भरपूर फल और सब्जियां खाएं। गर्म तरल पदार्थ नियमित रूप से पीएं, इससे ठंड से लड के लिए शरीर की गर्मी बनी रहेगी। शराब का सेवन न करें, यह शरीर के तापमान को कम करता है। बुजुर्ग लोगों, नवजात शिशुओं तथा बच्चों का विशेष ध्यान रखें। जरूरत के अनुसार ही रूम हीटर का प्रयोग करें तथा रूम हीटर के प्रयोग के दौरान पर्याप्त हवा निकासी का प्रबंध रखें।

ओवरटेक करने से बचें वाहन चालक

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि सर्दी के मौसम में घने कोहरे के दौरान विशेषकर सुबह और रात के समय कोहरे के कारण दृश्यता बेहद कम हो जाती है। ऐसे में वाहन चालकों को सीमित गति में, अपनी निर्धारित लेन में रहकर और यातायात नियमों का पूरी तरह पालन करते हुए वाहन चलाना चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके और नागरिक सुरक्षित यात्रा कर सकें। उन्होंने वाहन चालकों से अपील की है कि वे धुंध के मौसम में गलत दिशा में वाहन न चलाएं।

डीसी अभिषेक मीणा।

रिहान व अंश ने असाधारण प्रतिभा और समर्पण का प्रदर्शन किया

नेटबाल की टीम ने डीएवी राष्ट्रीय खेल में जीता सोना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

झांसी में आयोजित डीएवी राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में स्थानीय डीएवी पुलिस-पब्लिक स्कूल की टीम ने नेटबाल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने में कामयाबी हासिल की है। अंडर-14 टीम के खिलाड़ी रिहान व अंश ने इस प्रतियोगिता में असाधारण प्रतिभा और समर्पण का प्रदर्शन किया। दोनों आठवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं।

बाल वर्ग अंडर-17 टीम ने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच ब्रॉन्ज मेडल जीतकर गौरव बढ़ाया है, जिसमें पराग यादव और वीर ने अपनी खेल क्षमता का लोहा मनवाया। अंडर-19 नेटबाल प्रतियोगिता में कक्षा- दसवीं

रेवाड़ी। पदक विजेता खिलाड़ी स्कूल स्टाफ के साथ। फोटो : हरिभूमि

से हर्षित ने भी ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया। स्कूल के इन होनहार खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत और टीमवर्क से स्कूल और राज्य का नाम रोशन किया है। स्कूल प्रशासन और अभिभावक इस उपलब्धि से बेहद खुश हैं और इन खिलाड़ियों की सराहना कर रहे हैं। यह जीत हरियाणा के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और इन युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को दर्शाती है। इसी के साथ-साथ तुषार शर्मा ने छत्तीसगढ़ के रायपुर में स्थित बलवीर सिंह जुनेजा स्टेडियम में आयोजित प्रतियागिता में ताइक्वांडो अंडर-17 वर्ग में गोल्ड मेडल जीतकर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

दीपिका को सौंपा यूपी कांग्रेस महिला विंग का प्रभार

रेवाड़ी। हरियाणा महिला कांग्रेस की उपाध्यक्ष दीपिका यादव को कांग्रेस की राष्ट्रीय समन्वयक बनाने के बाद उत्तर प्रदेश कांग्रेस महिला विंग का प्रभार सौंपा गया है। दीपिका यादव ने कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई हैं उसका वह पूर्ण रूप से समर्पित हो कर कार्य करेंगी और पार्टी को आगे बढ़ाते हुए मजबूती देगी। दीपिका यादव ने कहा शीर्ष नेतृत्व ने उन पर भरोसा जताते हुए यह जिम्मेदारी सौंपी है वह उनका विश्वास कायम रखते हुए पार्टी को आगे बढ़ाएंगी। दीपिका यादव को उत्तर प्रदेश का प्रभारी बनाया गया है। उत्तर प्रदेश में निकट में ही चुनाव होने है जिसमें वो अपनी प्रभावी भूमिका निभाते हुए पार्टी में सामंजस्य बनाएंगी। दीपिका यादव ने इस नियुक्ति पर राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, प्रियंका गांधी, केसी वेणुगोपाल, अलका लांबा, प्रदेशाध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह, हरियाणा महिला कांग्रेस अध्यक्ष सुधा भारद्वाज, कैप्टन अजय यादव, भूपेंद्र हुड्डा, चौ. बिरेंद्र, चौ. बृजेंद्र सिंह व कुमारी शैलजा आदि नेताओं का आभार जताया है।

रेवाड़ी। दीपिका को नियुक्ति पत्र सौंपते हुए अलका लांबा। फोटो : हरिभूमि

रोहिंग्या व बंगलादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए सर्च अभियान जारी

रेवाड़ी। थाना कोसली व रामपुरा क्षेत्र में अनाधिकृत रूप से रहने वाले रोहिंग्या व बंगलादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए शनिवार को सर्च अभियान चलाया। पुलिस टीमों ने ईंट भट्टों सहित विभिन्न स्थानों पर झुग्गी झोपड़ियों, होटल, पोल्ट्री फार्म व अन्य संदिग्ध स्थानों पर अवैध तरीके से रहने वाले बांग्लादेशी, विदेशी नागरिक, रोहिंग्या व संदिग्ध लोगों की जांच की गई। इस दौरान पुलिस टीम ने वहा पर रह रहे बाहरी श्रमिकों की भी जानकारी ली तथा उनके पहचान पत्र भी जांचे। अभियान के तहत पुलिस ने बाहरी लोगों की पहचान सुनिश्चित की तथा संदिग्ध लोगों से पूछताछ भी की। इसके साथ ही पुलिस ने वाहनों के कागजातों की भी जांच की। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि अनाधिकृत रूप से किसी को भी रहने की छूट नहीं है।

रेवाड़ी। झुग्गियों और ईंट भट्टों पर लोगों से पूछताछ करते हुए पुलिसकर्मी। फोटो : हरिभूमि

किराएदारों का पुलिस सत्यापन कराने की अपील

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

स्थानीय ग्राम पंचायत ने गांव में मकान मालिकों से उनके अधीन मकानों में रहने वाले किरायेदारों का पुलिस चरित्र सत्यापन करवाने का अनुरोध किया है। सरपंच रामकिशन जांगड़ा ने बताया कि यह प्रशासनिक आदेशों के अनुरूप भी जरूरी है। इसके लिए फार्म पुलिस थाना कोसली से प्राप्त करना होगा और उसे भरकर वापस पुलिस थाना कोसली में ही जमा करना होगा। उन्होंने ग्राम वासियों से इस कार्य में सहयोग की अपील की है।

विधायक ने किया भोलेनाथ का जलाभिषेक

रेवाड़ी। जनवरी 1026 में गजनी के महमूद द्वारा सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण कर मंदिर को ध्वस्त किए जाने की घटना को 2026 में 1000 वर्ष पूरे होने पर आस्था व सभ्यता के महान प्रतीक सोमनाथ पर किए गए आक्रमण के एक हजार वर्षों की सहनशीलता, पुनरुत्था व निरंतरता को रेखांकित करने के वर्ष को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के रूप में मनाए जाने के तहत विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने शनिवार को भगवान शिव का जलाभिषेक किया तथा सभी से शिवालयों में पहुंचकर ओमकार मंत्र के साथ भगवान शिव का जलाभिषेक का आह्वान किया। इस मौके पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व-2026 सोमनाथ मंदिर की अविनाशी आस्था, स्वाभिमान और सनातन संस्कृति के प्रति हमारी निष्ठा का प्रतीक है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

महिला से मारपीट का आरोपी दोषी करार, दो साल के कारावास की सजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

कंवाली गांव में लगभग 6 साल पहले घर में घुसकर महिला से मारपीट करने के मामले में ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट की अदालत ने आरोपी को दोषी करार देते हुए 2 साल के कारावास की सजा सुनाई है। दोषी पर एक हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है, जिसका भुगतान नहीं करने पर तीन माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना पड़ेगा।

कंवाली निवपासी एक महिला ने पुलिस शिकायत में बताया था कि 7 फरवरी 2020 को वह अपने घर पर थी। इसी दौरान गांव का रहने वाला चरनपाल उर्फ पालिया दीवार कूदकर उसके घर में घुस आया। उसने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। सिर में लाठी लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गई थी। महिला को उपचार के लिए डहीना सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया था। थाना खोल में आरोपी के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज करके आरोपी चरनपाल उर्फ पालिया को गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने जांच पूरी होने के बाद अदालत में चार्जशीट दाखिल की। आरोपी के खिलाफ अदालत में साक्ष्य प्रस्तुत किए और गवाहों के बयान भी दर्ज कराए। साक्ष्यों और सभी पहलुओं पर सुनवाई के बाद ज्यूडिशल मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी विश्वास खटक की अदालत में आरोपी चरनपाल उर्फ पालिया को दोषी करार दिया।

रेवाड़ी। जिला न्यायिक परिसर का फाइल फोटो। फोटो : हरिभूमि

'जी राम जी' विधेयक से सरकार रचेगी विकसित भारत का इतिहास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

भारतीय जनता पार्टी की जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली ने केंद्र की मोदी सरकार की ओर से प्रस्तुत क्रांतिकारी विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन का पुरजोर समर्थन करते हुए इसे ग्रामीण भारत के इतिहास का सबसे बड़ा सुधार करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह विधेयक न केवल ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाएगा, बल्कि कांग्रेस के समय की भ्रष्टाचार और अदूरदर्शिता वाली योजनाओं के ताबूत में आखिरी कील साबित होगा। वंदना पोपली ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस ने दशकों तक 'गरीबी हटाओ' का खोखला नारा दिया, लेकिन धरातल पर केवल भ्रष्टाचार और बिचौलियों का तंत्र खड़ा किया। कांग्रेस की मनरेगा केवल गड्ढे खोदने और भरने तक सीमित थी, जिससे कोई स्थायी संपत्ति नहीं बनी।

कसोला में मेघवाल समाज की बैठक आज

बावल। मेघवाल उत्थान समिति हरियाणा के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने बताया कि मेघवाल समाज की बैठक 11 जनवरी को सुबह 10:30 बजे ग्राम कसौला में मेघवाल सभा का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि इस मीटिंग में सभी पदाधिकारीगण और महिला शक्ति एवं भारी संख्या में हाजिर होकर समाजहित में एक नई पहल में अपनी हिस्सेदारी एवम् इस मुहिम में हिस्सा लेकर अपने विचार साझा करें और मेघवाल उत्थान समिति को मजबूत बनाने का काम करें।

वरिष्ठ नागरिकों और संस्थाओं को राज्य पुरस्कार के लिए आवेदन कल तक

रेवाड़ी। हरियाणा सरकार बुजुर्गों को मान-सम्मान देने और समाज निर्माण में उनके अनुभव का लाभ उठाने के लिए निरंतर ठोस कदम उठा रही है। इसी कड़ी में हरियाणा सरकार की ओर से वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान और उनके कल्याण के लिए वर्ष 2025-26 के लिए वरिष्ठ नागरिक सम्मान पुरस्कार योजना के तहत आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। ऑनलाइन आवेदन 12 जनवरी तक जमा कराए जा सकते हैं। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि हरियाणा सरकार सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जातियां एवं पिछड़े वर्ग कल्याण विभाग हरियाणा द्वारा योजना के तहत समाज सेवा, कला, खेल और बहादुरी जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले बुजुर्गों को नई पहचान और प्रोत्साहन प्रदान करेगी।

विरोध — कांग्रेस गरीबों का हक छीनेने नहीं देगी और आखिरी दम तक इस लड़ाई को लड़ेगी

मनरेगा में बदलाव बर्दाश्त नहीं: रमेश ठेकेदार

- कांग्रेस अनुसूचित जाति सेल डेढ़ माह तक चलाएगा अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

कांग्रेस के एससी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष रमेश ठेकेदार ने कहा कि केंद्र सरकार ने एक साजिश के तहत मनरेगा का नाम बदलकर इस योजना को खत्म करने की योजना बनाई है। मनरेगा में केंद्र से मिलने वाले पैसे में कटोती की गई है, जिसे कांग्रेस किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेगी। ठेकेदार शनिवार को अपने कार्यालय में मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मनरेगा कांग्रेस की ऐतिहासिक देन है। इसे खत्म करने की कौशिश संविधान और सामाजिक न्याय पर सीधा हमला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मनरेगा के नाम में बदलाव व किए गए संशोधन को बर्दाश्त नहीं करेगी। भाजपा सरकार ने जानबूझकर इस योजना को कमजोर किया है, ताकि गरीब मजदूर बेरोजगार होकर पतन की ओर चले जाएं। रमेश ठेकेदार ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि मनरेगा से छेड़छाड़ और मजदूरों के साथ हो रहे अन्याय को तुरंत बंद नहीं किया गया, तो कांग्रेस एससी डिपार्टमेंट सड़कों पर उतरकर 45 दिन तक लगातार आंदोलन करेगा। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि कांग्रेस गरीबों का हक छीनेने नहीं देगी और आखिरी दम तक इस लड़ाई को लड़ेगी। एससी डिपार्टमेंट के प्रदेश उपाध्यक्ष अनिल फांडन और प्रधान मीर सिंह चावरिया ने कहा कि भाजपा सरकार केवल कॉरपोरेट घरानों की सेवा में लगी है और गांव, किसान व मजदूर उसकी प्राथमिकता में नहीं हैं। मनरेगा के काम बंद कराए जा रहे हैं और कागजों में झूठा विकास दिखाया जा रहा है।

रेवाड़ी। मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए रमेश ठेकेदार। फोटो : हरिभूमि

मनरेगा को खत्म करने की साजिश

कांग्रेस के प्रवक्ता वेदप्रकाश विद्रोही ने इस मौके पर कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार मनरेगा का नाम बदलना इसे खत्म करने की सोची-समझी साजिश है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार गरीब, दलित और मजदूर विरोधी सोच के तहत उस योजना पर हमला कर रही है, जो करोड़ों ग्रामीण परिवारों की रोजी-रोटी की गारंटी है। इस मौके पर खूबराम पूर्व सरपंच नंदरामपुर बास, राजेंद्र गहलोत, मामराज, रविदत्त, गौरीशंकर, इंद्रजीत, सुदेश, हरिराम सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

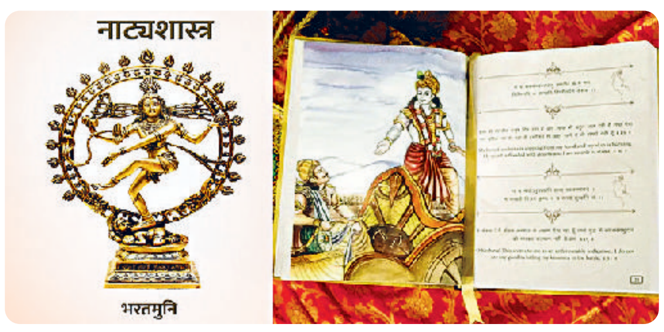

आवरण कथा

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

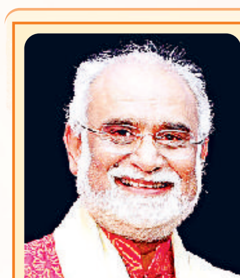

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

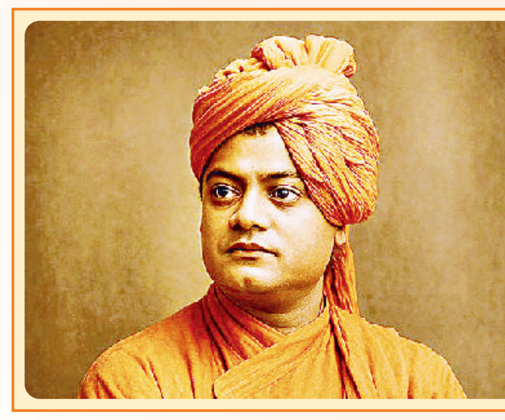

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

प्रेरक व्यक्तित्व
शिखर चंद जैन

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

कविता
अवतार सिंह अक्षरजीवी

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

व्यंग्य
भूपेंद्र भारतीय

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

तपेली में तरी ही बची

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सांस्कृतिक आयोजन
धीरज बसाक

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता
राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सवः मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलकः राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्टः भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थानी लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्णः बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षणः अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है। *

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार
सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाली हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियतः यह त्योहार ना केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या ही बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूपः इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहतः सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस कराने वाले हार्मोन, सेरेटॉनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्यूनिटीः देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाले भी होते हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है। *

सजेशन
नरेंद्र कुमार

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए
जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरतः पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरीः प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीगः बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूलः आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंगः अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्तेः आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है। *

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में
कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्में: साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

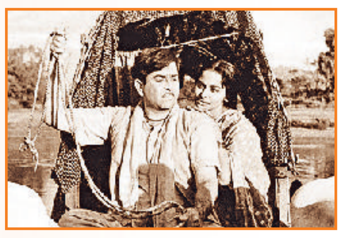

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्में: बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाई। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्में: साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतरः साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएं: हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों। *